E-Learning Study Material

By- Prof (Dr) YADWENDRA SINGH
MAHARAJA COLLEGE, ARA
VKS UNIVERSITY, ARA, BIHAR

B.A. Economics Hons First Year, First Paper

Q:- Differentiate between Gross and Net Profit. What are the components of Gross Profit?

(Gross Profit is your business's revenue minus the cost of goods sold..... Gross Profit is your company's profit before subtracting expenses. Net Profit is your business's revenue after subtracting all operating, interest and tax expenses, in addition to deducting your Cost of Goods Sold (COGS))

Scanned with CamScanner

कुल लाभ तथा वास्तविक लाभ :-

कुल लाभ (Gross Profit) :- कुल लाभ का तात्पर्य किसी व्यवसायी को उत्पादन लागत के ऊपर जो अधिक कुल शब्दों में अन्य उत्पत्ति साधनों को दिए जाने वाले कुल प्रतिफल तथा घिसावट व्यय को निकालने के पश्चात जो शेष बचता है उसे ही लाभ कहते हैं। व्यवसायी की लागतें दो प्रकार की होती है :- (i) स्पष्ट लागतें (Explicit Costs) तथा (ii) अस्पष्ट लागतें (Implicit Costs) कुल लाभ को ज्ञात करने के लिए कुल आय में से केवल स्पष्ट लागतों को घटाया जाता है, अर्थात्,

कुल लाभ = कुल आय − स्पष्ट लागतें

(Gross Profit = Total Revenue − Explicit Cost)

उत्पत्ति के साधनों को काम पर लगाने के लिए जो भी खर्च किया जाता है उसे स्पष्ट लागतें कहते हैं। इन्ही स्पष्ट लागतों को कुल आय में से घटाने के बाद जो राशि शेष रह जाती है उसे कुल लाभ कहते हैं।

कुल लाभ के अंग (Constituents of Gross Profit) :- कुल लाभ कई तत्वों का मिश्रण होता है। इस तथ्य की ओर सर्वप्रथम

Scanned with CamScanner

संकेत करने का श्रेय प्रो० वाकर (Prof Walker) को जाता है। कुल लाभ में निम्नलिखित बातों को शामिल किया जाता है:-

(i) लाइसी की भूमि तथा पूँजी का प्रतिफल (Reward due to Land and Capital):- जब कोई लाइसी किसी वस्तु का उत्पादन करता है तब वह उस उत्पादन के लिए अपनी निजी भूमि, पूँजी, मकान तथा श्रम आदि लगाता है। अतः वास्तविक या शुद्ध लाभ का ~~अनुमान~~ अनुमान लगाते समय कुल लाभ में से लाइसी द्वारा दी गयी भूमि का लगान, उसकी पूँजी का ब्याज, उसके श्रम की मजदूरी, उसकी संगठन सम्बन्धी सेवाओं का वेतन आदि निकाल देना चाहिए, क्योंकि यदि लाइसी इन साधनों का प्रयोग स्वयं न करके अन्य लोगों को प्रयोग करने के लिए देता है तो उसे प्रयोग के बदले में अवश्य पुरस्कार मिलता।

(ii) घिसावट तथा रख-रखाव व्यय (Depreciation and Maintenance charges) - प्रत्येक उद्योग में न्यूनाधिक पूँजीगत वस्तुएं (जैसे- मशीन) अवश्य लगी होती है। ये कुछ समय तक तो कार्य करती है परन्तु बाद में काम के लायक नहीं रह जाती है। फलतः उन्हें तुरन्त पुनः खरीदना पड़ता है। अतः ~~तुरन्त~~ ही नई पूँजी की जरूरत पड़ती है। अतः प्रत्येक लाइसी घिसाई कोष की व्यवस्था करता है। प्रत्येक लाइसी अपने

Scanned with CamScanner

उद्योगधंधों का बीमा भी कराले ता है। अतः वास्तविक लाभ का निर्धारण करने के लिए कुल लाभ में से घिसाई या बीमा व्यय निकाल दिया जाता है।

(iii) अव्यक्तिगत लाभ (Extra-Personal Gains) - अव्यक्तिगत लाभ के अन्तर्गत प्रमुख रूप से दो प्रकार के लाभ सम्मिलित किये जाते हैं - (a) एकाधिकारी लाभ (Monopoly Gains) - कभी कभी उत्पादक एकाधिकारी स्थितियों में कार्य करता है जिसमें उसे साधारण लाभ से कहीं अधिक लाभ प्राप्त होता है। ऐसे अतिरिक्त लाभ को एकाधिकारी लाभ (Monopoly Gains) कहते हैं। (b) आकस्मिक लाभ - (Chance Gains) - कभी युद्ध, अकाल या बाढ़ आदि के कारण उत्पादकों को अनायास ही लाभ प्राप्त होने लगते हैं। यह लाभ योग्यता के कारण नहीं, परन्तु परिस्थितियों के अनुकूल होने के कारण होता है।

(iv) वास्तविक लाभ - (Net Profit) - वास्तविक लाभ साहसी को दो प्रकार के कार्यों से (a) जोखिम झेलने तथा (b) मोल भाव करने की योग्यता का पुरस्कार है।

जहाँ तक जोखिम झेलने का प्रश्न है उसे प्रत्येक व्यक्ति नहीं झेल सकता है। केवल साहसी ही जोखिम झेलने की क्षमता रखते हैं।

साहसी अपनी योग्यता तथा चतुराई का प्रयोग करके वस्तु की उत्पादन लागत को घटा लेता है जिससे उसे अधिक लाभ (Profit) मिलता है।

Scanned with CamScanner